Global Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.gjms.co.in
Volume 2, Issue2, January 2014
ISSN: - 2348-0459

अज्ञेयजी के उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

मनीषा शर्मा विभागाध्याक्ष (जनसंचार) चोईथराम कालेज, इन्दौर

सहा. प्राध्या. योगिता राठौर एनीबीसेन्ट कालेज, इन्दौर

संक्षिप्त

प्रस्तुत शोध पत्र अज्ञेयजी के उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' में मनोवैज्ञानिकता के चित्रण पर आधारित है। वैसे भी अज्ञेयजी मनोवैज्ञानिक साहित्यकार माने जाते हैं। अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि उनके साहित्य में मनोवैज्ञानिक चिंतन के साथ–साथ जनवादी चेतना के स्वर भी मिलते हैं इसलिए वे मानव के अहं भाव तथा मानसिक संघर्ष और तनाव जैसी प्रवत्तियों का चित्रण सरलता से करते हैं। अंत में उसे एक सृजनात्मक मोड़ या सकारात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। उनका मानना है कि यही प्रवृत्तियां छद्म रूप में सभ्य मानव के समस्त व्यक्तिगत, सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक कियाओं को संचालित करती है।

शब्द खोज – मनोवैज्ञानिकता ,मानसिक, संघर्ष

प्रस्तावना

अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न और विद्रोही कलाकार है। इन्होंने सदैव परम्पराओं के विरूद्ध विद्रोह का स्वर उंचा किया है। चाहे वह परम्परा सामाजिक हो और चाहे साहित्यिक। अज्ञेय ने जिस प्रकार काव्यगत रूढ़ियों संभावनाओं से संपन्न प्रयोगवाद को जन्म दिया उसी प्रकार उपन्यास के क्षेत्र में भी इन्होंने संवेदन और शिल्प के आधार पर नये–नये द्वारों को उन्मुक्त किया और जिस प्रकार कविता के क्षेत्र में इनका विशिष्ट स्थान है, उसकी प्रकार की विशिष्टता ये औपन्यासिक क्षेत्र में भी बनाए हुए हैं।

उपन्यास जगत में मनोवैज्ञानिकता की पकड़ को आगे बढ़ाने में जहां जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, मन्नू भण्डारी ने अपने–अपने स्तर पर प्रयोगात्मक प्रयास किये हैं, वही श्री अज्ञेय ने एक लम्बे समय तक साहित्य के माध्यम से पात्रों के हृदय के भीतर होने वाली प्रत्येक हलचल को उनके मानस और हृदय दोनों ही स्तर पर डूब कर जाना है यही कारण है कि अज्ञेयजी के सभी पात्र पाठकों को अपने मनोभावों के साथ बहाकर ले जाने की सामर्थ्यता रखते हैं।

मनोविज्ञान की कोई निश्चित परिभाषा देना कष्ट साध्य है क्योंकि मन की सूक्ष्मता एंव त्वरित कियाशीलता को विज्ञान के नियमों–उपनियमों में बांधना आसान काम नहीं है। जितना हम खोजेंगे उतनी ही नई नई परतें खुलती ही चली जाएंगी। समय–समय पर विभिन्न मनोवैज्ञानिक अपने चिंतन, मनन परीक्षण एवं अध्ययन के आधार पर मन की थाह पाने का प्रयास करते रहे हैं। इस कम में अनेक विचारकों ने अपने सिद्धांत रखे हैं वह संक्षेप में निम्नानुसार है – (1) मनोविश्लेषणवादी (2) गेस्टाल्टवादी (3) व्यवहारवादी (4) प्रवृत्तिवादी (5) वातावरणवादी (6) स्वप्न सिद्धांत (7) कला की मूल प्रेरणा आदि।

मनोविश्लेषण वादियों ने सर्वप्रथम मानव के चेतन स्तर को भेदकर उसके अवचेतन, सर्वव्यापी मन में झांकने का प्रयास किया है। ये वृत्ति चेतन, अर्द्धचेतन, अवचेतन व काममनोग्रंथि, इदम, अहम् तथा नैतिक मन आदि हैं। अतएव मनोविज्ञान से संबंधित चिन्तकों के मौलिक विचारों सम्प्रदायों तथा विविध वादों का प्रभाव औपन्यासिक जगत पर पड़ना स्वाभाविक था। इसी कम में भी श्री अज्ञेय ने साहित्य जगत को तीन महत्वपूर्ण उपन्यास दिये 'शेखर : एक जीवनी', नदी के द्वीप और अपने–अपने अजनबी।

मानव मन की गुफाओं, कंदराओं और भित्तियों के शिल्पी अज्ञेय 'शेखर : एक जीवनी' की निमित्त से मनावैज्ञानिक उपन्यासकार का आधार फ्रायडीय सिद्धांतों के प्रतिपादन में है जिसके द्वारा व्यक्ति के अर्न्तजगत को उद्घाटन, व्यक्तित्व निर्माण में सहायक तत्वों का प्रतिफलन दर्शाया गया है।

शेखर : एक जीवनी' मनोवैज्ञानिक शैली का उपन्यास है। साधारण घटनात्मक, सामाजिक उपन्यास नाटक

या पात्रों के चरित्र का चित्रण करने के लिए घटनाऐं संजोता चलता है और वे ही पाठक की दृष्टि में अधिक रहती है। ऐसे उपन्यास में पाठक का ध्यान इस बात पर रहता है कि पात्र क्या करता चलता है। इसके विपरीत, मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पाठक के ध्यान मे रहता है कि पात्र जो करने जा रहा है या जो करते–करते रह गया है वह क्यों। संक्षेप में कहें तो सामाजिक उपन्यास बताता है कि पात्र क्या करता है और मनोवैज्ञानिक उपन्यास बताता है कि वह क्यों करता है। सूत्र रूप में ''मानव–मनोभूमि'' का 'प्रत्यक्षीकरण' मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। मन अस्थिर और निर्माणाधीन प्रकिया है। वह प्रत्यक्ष अध्ययन की वस्तु यहां है। मनोवैज्ञानिकों ने मानव–मन के चेतन तथा अचेतन स्तरेां को स्वीकार कर उनकी पारस्परिक किया–प्रतिकिया के मार्मिक तथ्यों का दर्शन किया है। इसे मनोविश्लेषण का नाम मिला है। मनोविश्लेषण से समाज–विज्ञान, विज्ञान, इतिहास और शिक्षा–दर्शन की दिशाएं खुलती हैं। मनोवैज्ञानिक उपन्यास में व्यक्ति को समाज के सर्वग्राही आधिपत्य से मुक्ति दिलाकर उसकी मूल चेतना को स्वतः अभिव्यक्त होने का अवसर दिया जाता है। समाज में जो कुछ दिख पड़ता है वह मनुष्य का वास्तव में निज नहीं है। अन्य जन अपनी दृष्टि–विशेष से उसके संबंध में अपनी अलग धारणा बनाते हैं। लोगो की धारणा तथा मनुष्य के निजत्व के मध्य अंतर होने के कारण मनुष्य की सामाजिक स्थिति, उसका सामाजिक मूल्यांकन अयथार्थ ठहरता है। ऐसी स्थिति में विशाल समाज के बीच स्थित व्यक्ति का एकाकीपन और भी बढ़ जाता है। मनुष्य अकेलेपन से छुटकारा चाहता है वह अपने अर्न्तमन की पीड़ा को कहीं व्यक्त करने के लिए आकुल रहता है। उसके एकाकीपन उसके अर्न्तमन की अकुलाहट को मनोवैज्ञानिक उपन्यास में अभिव्यक्ति मिली है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास में उपन्यासकार कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता। अचानक हम अपने को खिड़की पर बैठे पाते हैं। लेखक अदृश्य रूप में कहीं पर, मंच–व्यवस्थापक और अभिनेता रूप में, हम क्या देंखेंगे इसकी व्यवस्था करने में लगा रहता है। वह हमें लगातार एक ऐसे इन्द्रजाल में डाले रहता है कि हमें लगता है वहां जो कुछ घटित हो रहा है, हम उसका अनुभव कर रहे हैं, और इस प्रकिया में वह हमें अनेक प्रकार की असम्बद्ध और विचित्र वस्तुओं को देखने के लिए कहता है। अब हम किसी दूसरे के रिपोर्ट पर कि उसने क्या देखा है, निर्भर न रहकर स्वयं अपनी आंखों से देखते हैं और उसके प्रभाव का अनुभव करते हैं।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास पात्रों या नायक की चेतना का यथार्थ चित्रण करने के लिए चेतन प्रवाह रैली का उपयोग कर विशेष सामर्थ्य करता है। मनुष्य की मन स्थिति सर्वथा सुनिश्चित नहीं है। यह अपने अनवरत्, अविकल स्पंदन के कारण तरह है, प्रतिक्षण दोलायमान है। मनुष्य की चेतना वर्तमान में है किन्तु उसके दोनों छोर अनोखी रीति से अतीत और भविष्य को छूते रहते हैं। उनकी स्मृतियां मन को विगत की ओर आकृष्ट करती हैं और उन स्मृतियों में कामनाओं का यह मेल उपन्यास की चेतन–प्रवाह चित्रण पद्धति में बड़ी खूबी से मूर्त हो उठता है। यह पद्धति मानव जीवन के आंतरिक यथार्थ की द्योतक है। यह घटनाओं की स्थूलता और कृत्रिमता को त्यागकर जीवन की मूल संवेदना के अधिकतम निकट पहुंचाने के लिए प्रयत्नशील रहती है।

'शेखरः एक जीवनी' में 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास' की अनेक विशेषताऐं मिलती हैं, पर विशुद्ध पारिवारिक अर्थ में इसे 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास' नहीं कहा जा सकता। जैसा कहा जा चुका है, मनोवैज्ञानिक उपन्यास की प्रकृति आत्मकथात्मक होती है। 'शेखर : एक जीवनी' भी आत्मकथात्मक उपन्यास हैं यहां तक कि कुछ आलोचक इसे अज्ञेय की छद्म जीवनी तक मानने के तर्क देते हैं। 'शेखरः एक जीवनी में बाह्य यथार्थ के बजाय आंतरिक स्थिति एवं यथार्थ का चित्रण हुआ है। प्रेमचंद के उपन्यासों की तरह इसमें हमारे चारो ओर बिखरी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं का चित्रण नहीं हुआ है। बाहरी दुनिया के ब्यौरे इसमें कम मिलते हैं, न ही इसमें पात्रों की भीड़ है। सच पूछे तो उपन्यास से पाठक के सामने आने वाला एक ही पात्र है, शेखर। शेखर उपन्यास के प्रथम पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक पाठक की चेतना में बना रहता है। हम शेखर को बाहरी समस्याओं से संघर्ष करते हुए बहुत कम पाते हैं। अधिकतर वह आंतरिक समस्याओं से ही जूझता रहता है। शेखर की अधिकांश समस्याऐं आंतरिक हैं। बचपन में वह भूख एंव वस्त्र की समस्याओं से नहीं, बल्कि अहं, भय, सेक्स की समस्याओं से घिरा है। ये तीनों ही वृत्तियां उसके सारे शिशु व्यवहार को परिचालित करती हैं और उपन्यासकार ने इनसे सम्बद्ध प्रत्येक घटना का स्मृति रूप में, जीवंत प्रसंगों के रूप

में वर्णन किया है। उपन्यास में शिशु शेखर का मनोवैज्ञानिक अध्ययन बहुत ही संगत रूप में प्रस्तुत किया गया है। बच्चे स्कूल में या घर पर मास्टर से पढ़ने से क्यों जी चुराते हैं, इसकी व्याख्या शेखर के माध्यम से शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर की गई है। इसके बाद जब शेखर वयः संधि की अवस्था में पहुंचता है, तो उस समय की उसकी मानसिक दशा का चित्रण मिलता है। वयः संधि की अवस्था में, बच्चों में, शरीर विज्ञान की दृष्टि से कामात्मक प्रौढ़ता आ जाती है। जबकि समाज इसे मान्यता नहीं देता है और इस कारण बच्चों को एक मानसिक संघर्ष और तनाव की स्थिति से गुजरना पड़ता है। शारदा से शेखर का प्रेम और उसका मानसिक संघर्ष वयः संधि की मानसिक स्थिति का सुन्दर चित्रण है। विवाह के बाद सरस्वती के चले जाने पर शेखर की जो हालत होती है, वह बिल्कुल मनोवैज्ञानिक है।

''शेखर को जाने क्या हो गया वह जो कभी रोता नहीं था, अब अकारण रोने लगता, कभी रोटी खाता जाता और आंसू पोंछता जाता, कभी मां पूछती 'शेखर, आज तो तुमने कुछ नहीं खाया, तो एकाएक फूट पड़ता, कभी पिता कहते 'जाओ लेटर बाक्स में से डाक निकाल लाओ, तो उनकी खिड़की खोलकर रो उठता और उसे स्वयं पता नहीं लगता कि क्यों रोता है वह...।"[1]

वयः संधि की दहलीज पर पहुंचा शेखर का एकाकीपन बढ़ जाता है। उसमें हो रहे शारीरिक एंव मानसिक परिवर्तन उसे विचलित कर देते हैं। उसे लगता है कि सारा संसार उसके साथ अन्याय कर रहा है, सब उसके विपरीत हैं, शत्रु है और वह एक ओवरकोट, एक बिस्कुट का पैकेट और एक डबल रोटी लेकर घर से भाग जाता है। फिर स्वयं ही घर लौट भी आता है।

प्रारंभिक किशोरावस्था एक अजीब बेहूदा और उटपटांग ;आकवर्ड्ध उम्र होती है। शेखर की इस अवस्था का वर्णन उपन्यास में विस्तार के साथ किया गया है।

''अपनी ही अशांति चित्तता, अस्थिरता शेखर के लिए असहय होने लगी। उसे लगने लगा, वह कुछ चाहता है, लेकिन क्या चाहता है, यह नहीं जान पाता और इसी को जानने के लिए वह अनेक प्रकार की चेष्टाऐं करने लगा..... अनेक रास्तों पर एक साथ ही भटकने लगा .....।"[2]

''उसे लगता, उसके शरीर में कोई परिवर्तन हो रहा है। उसे लगता, वह बीमार है, उसे लगता, उसमें बहुत शक्ति और स्फूर्ति आ गई है, उसे लगता उसे जीवन की एक नयी किश्त मिलने वाली है ..... और वह अपने ही मद से उन्मत्त कस्तूरी मृग की तरह, या प्लेग से आक्रांत चूहे की तरह, अपनी दुम का पीछा करते हुए कुत्ते की तरह, अपने ही आसपास चक्कर काट रह जाता .....।"[3]

इस तरह के कई उदाहरण उपन्यास में दिये गये हैं। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि शैशव और वयःसंधि की स्थितियों से गुजरते हुए शेखर की मनःस्थितियो का अध्ययन बहुत विस्तार एवं गहराई के साथ किया गया है। पर ज्यों ही शेखर किशोरावस्था में प्रवेश करता है वह मानसिक से अधिक शारीरिक दृष्टि से क्रियाशील हो जाता है।

इससे स्पष्ट है कि उपन्यास में शेखर की मनःस्थितियों का चित्रण विस्तार के साथ हुआ है। फिर भी 'शेखरः एक जीवनी' को आधुनिक अर्थ में मनोवैज्ञानिक उपन्यास नहीं कहा जा सकता। यो उपन्यासकार ने मनोवैज्ञानिक उपन्यास की शिल्प प्रविधि का सहारा लिया है और पूरे उपन्यास को एक पात्र ;शेखरद्ध के अवलोकन बिन्दु से प्रस्तुत किया है। फिर भी 'शेखरः एक जीवनी' जेम्स जॉयस, मार्शल प्रस्त, डोरोथी, रिचर्डसन या वर्जीनिया वूल्फ के उपन्यास की कोटि का मनोवैज्ञानिक उपन्यास नहीं बन पाया है।

इसके कई कारण हैं। जैसा हम जानते हैं कि मनोवैज्ञानिक उपन्यास चेतना के विशाल सागर में अपनी तरह, प्रवाहमान, गत्यात्मक अवस्था में प्रस्तुत किये जाते हैं। उसमें कोई ''कहानी'' नहीं होती है, बाहय कार्यकलाप नाममात्र के होते है। 'अंतरालाप मनोवैज्ञानिक उपन्यास का अनिवार्य माध्यम होता है। 'शेखरः एक जीवनी' को जब इन दृष्टियों से देखते हैं तो कई बातें सामने आती हैं। यह ठीक है कि हम आरंभ में ही शेखर के मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं और अंत तक बने रहते हैं, पर यह उपन्यास शेखर की चेतना के समुद्र में दीर्घ यात्रा का प्रभाव पैदा नहीं करता। उपन्यास के प्रारंभिक खंड प्रवेश को पढ़ते समय हम शेखर की चेतना में प्रवेश करते हैं। इस खंड को पढ़ते समय एक ऐसी असम्बद्धता, आंतरिक, अनुभव क्षेत्र की यात्रा और अतीत

तथा वर्तमान में एक हो जाने का बोध होता है, जो मनोवैज्ञानिक उपन्यास की विशेषता है। पर इस खंड के अंत तक पहुंचते–पहुंचते शेखर अपनी जीवनी लिखने लगता है। इसके बाद हम शेखर की समूची 'कहानी' उसकी जीवन के रूप में प्राप्त करते हैं। इस प्रकार उपन्यास का विषय शेखर की चेतना का प्रस्तुतीकरण न रहकर एक क्रांतिकारी नायक द्वारा अपने जीवन में नियति के सूत्र को पहचानने का प्रयास बन जाता है।

दूसरी बात, मनोवैज्ञानिक उपन्यास में किसी पात्र विशेष के मस्तिष्क में जगने वाली स्मृतियां समय के अनुक्रम से मुक्त होती है। यही नहीं, अतीत और वर्तमान मिलकर एक हो जाते हैं। पर जब शेखर अपनी 'जीवनी' लिखने लगता है तो स्मृतियों के रूप में आयी घटनाओं में एक क्रम दिखाई देने लगता है। अज्ञेय से चेतना के प्रवाह के कठिन शिल्प का निर्वाह नहीं हो पाया है। उपन्यास दूसरा भाग परम्परागत उपन्यासों के ढंग पर लिखा गया है। द्वितीय भाग में मनःस्थितियों का चेतन प्रवाह नहीं मिलता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास में नायक के मस्तिष्क में विचार ज्वर की तरह आते हैं। उनमें तार्किक क्रम नहीं होता। उनकी भाषा भी वाक्य विन्यास के नियमों के अनुसार निर्मित नहीं होती। 'शेखर : एक जीवनी' में यह बात कहीं नहीं दिखाई पड़ती। यद्यपि आरंभ में शेखर के विचारें में आंतरिकता थोड़ी मात्रा में दिखाई पड़ती है पर वे अवेतन के क्षेत्र में निकट के विचार नहीं है। उनमें तार्किक क्रम शुरू से ही विद्यमान है। उदाहरण के लिए 'शेखर : एक जीवनी' की आरंभिक पंक्तियां देखी जा सकती हैं – फांसी। "जिस जीवन को उत्पन्न करने में हमारे संसार की सारी शक्तियां हमारे विकास, हमारे विज्ञान, हमारी सभ्यता द्वारा निर्मित सारी क्षमताऐं या औजार असमर्थ है, उसी जीवन को छीन लेने में, उसी का विनाश करने में, ऐसी भोली हृदयहीनता ...फांसी।"[4]

बाद में चलकर तो शेखर के मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली विचारधारा ओर भी तर्कसंगत, सुसंबद्ध ओर सुविचारित हो जाते हैं। संपूर्ण उपन्यास में भाषा गांभीर्य एंव चिंतन इसकी भाषा को बौद्धिक एंव वैचारिक श्रेष्ठता प्रदान करते हैं।

यह चिन्तन धारा किसी भी अर्थ में सहज और मनोवैज्ञानिक नहीं है। यह भाषा, यह वाक्य–विन्यास यह तार्किक संगति 'अंतरालाप' की नहीं हो सकती।

'शेखर : एक जीवनी, विषय और भाषा की दृष्टि से तो नहीं, पर शिल्प की 'दृष्टि से एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास जरूर है। उपन्यासकार ने मनोवैज्ञानिक उपन्यास की टेक्नीक का उपयेाग इस उपन्यास में किया है। 'उपन्यास कालक्रम की श्रृंखला में बंधे कार्य व्यापार के रूप नहीं प्रस्तुत किया गया है। हम एक बारगी फांसी की प्रतीक्षा करते, उपन्यास के केन्द्रीय पात्र, शेखर के मस्तिष्क में प्रवेश कर जाते हैं और अंत तक वहीं बैठकर शेखर के मस्तिष्क की खिड़की से उसके अतीत के असबद्ध जुलूस को देखते रहते हैं। यद्यपि मनोवैज्ञानिक उपन्यास के कठिन शिल्प का पूरी तरह से निर्वाह ''शेखर : एक जीवनी' में नहीं हो पाया है, पर उस प्रविधि को अपनाकर उपन्यास ने अपने विषय को अधिक आर्कषक रूप में प्रस्तुत करने का एक हद तक सफल प्रयास किया है।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि 'शेखर : एक जीवनी' सही अर्थों में मनोवैज्ञानिक उपन्यास नहीं है। इसका उद्देश्य एक पात्र विशेष के चरित्र को पूर्ण सच्चाई के साथ प्रस्तुत करना है। अधिक से अधिक इतना कहा जा सकता है कि यह उपन्यास के समाज से व्यक्ति की ओर मुड़ने की दिशा में एक प्रयास है। या यह कह सकते हैं कि यह उपन्यास की मनोलेाक की यात्रा के पहले का एक पड़ाव है।

संदर्भ सूची

1. शेखर : एक जीवनी ;भाग–1) – अज्ञेय
2. शेखर : एक जीवनी ;भाग–1) – अज्ञेय
3. शेखर : एक जीवनी ;भाग–1) – अज्ञेय
4. शेखर : एक जीवनी ;भाग–1) – अज्ञेय

अन्य संदर्भ सूची

1. डॉ. परमांनद श्रीवास्तव शेखर : एक जीवनी का महत्व।
2. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास।
3. अज्ञेय आत्मनेपद।
4. डॉ. गोपाल राय हिन्दी उपन्यास कोष ;भाग–2)
5. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या
6. ओम प्रभाकर अज्ञेय का कथा साहित्य
7. नंद दुलारे वाजपेयी आधुनिक साहित्य
8. डॉ. शशिभूषण सिंहल हिन्दी साहित्य : नये क्षितिज
9. डॉ. रामदरश मिश्रहिन्दी उपन्यास : एक अंर्तयात्रा
10. जगदीश पांडेयशील–निरूपण : सिद्धांत और विनियोग।
11. डॉ. राजमल बोराहिन्दी उपन्यास : प्रयोग के चरण।
12. डॉ. सुषमा प्रियदर्शिनीहिन्दी उपन्यास।
13. केदार शर्माउपन्यासकार अज्ञेय।
14. विजय मोहनसिंहअज्ञेय : कथाकार और विचारक।